ई–संस्करण, अंक 5

Room to Read®
World Change Starts with Educated Children

गपशप

नमस्कार,
आशा है कि आप और आपका परिवार अच्छे से होंगे। जैसा कि आप जानते हैं हम सभी लॉकडाउन में हैं और अपने–अपने घर पर हैं, हमने सोचा कि अपने नियमित समाचार पत्र गपशप का ई–संस्करण लाया जाए। हम आपको लॉकडाउन की इस अवधि के दौरान समय–समय पर इस तरह के ई–गपशप भेजते रहेंगे। आशा है कि आपको इसे पढ़कर अच्छा लगेगा। आप इसे अपने दोस्तों, परिवार के सदस्यों और आपके अनुसार जिन्हें भी इन लेखों को पढ़ने में मज़ा आए उनके साथ साझा कर सकते हैं।
घर पर रहें। सुरक्षित रहें।

रूम टू रीड परिवार

युवाशक्ति के मार्गदर्शक – स्वामी विवेकानंद

किसी भी देश के युवा उस देश के भविष्य होते हैं। युवाओं के हाथों में ही देश की उन्नति की बागडोर होती है। युवाओं के प्रेरणास्रोत, समाज सुधारक स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था–

''उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक कि अपने लक्ष्य तक न पहुँच जाओ।''

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ। वह चाहते थे कि युवा अपनी ताकत को पहचानें और आगे बढ़ें। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय युवाओं के स्वाभिमान को जगाया और उम्मीद की नई किरण पैदा की। स्वामी विवेकानंद युवाशक्ति के पक्षधर थे। विवेकानंद जी के विचारों में वह क्रांति और तेज है जो सारे युवाओं को नई चेतना से भर देता है।
स्वामी विवेकानंद का जीवन सबके लिए एक सीख का माध्यम है जिनसे हमें बहुत प्रेरणा मिलती है। इनके जन्मदिन–12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। तो स्वामी विवेकानंद जी के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? यही की अगर हमें जीवन में सफल होना है तो हमेशा अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए। आप अपने समुदाय से किसी एक युवा के बारे में सोचें जिनसे आपको प्रेरणा मिलती है। अपने लाइफ स्किल जर्नल में उसके बारे में लिखें या चित्र भी बना सकते हैं। आइये अपने देश के कुछ युवा आइकन को जानते हैं और इनकी उपलब्धियों से प्रेरित होते हैं।

हिमा दास एक भारतीय धावक है।
यह वर्ल्ड अंडर-20 एथलेटिक्स प्रतियोगिता की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी हैं।

अनुष्का शंकर एक सितारवादक एवं संगीतकार हैं।
इन्होंने 13 साल की उम्र में अपना पहला सार्वजनिक प्रदर्शन दिया था। और चौदह वर्ष की आयु में अपना पहला संगीत एलबम जारी कर दिया था।

लक्ष्मी अग्रवाल एक टीवी होस्ट हैं।
वह एक एसिड अटैक सर्वाइवर है। वह स्टॉप सेल एसिड की संस्थापक है, जो एसिड हिंसा और एसिड की बिक्री के खिलाफ कार्य करती है।

रणवीर सिंह एक सिने-जगत अभिनेता है।
इन्होंने 2010 में फिल्म 'बैंड बाजा बारात' से सिनेमा में कदम रखा। इसके बाद से लगातार फिल्मों में अभिनय कर रहे हैं।

अफरोज़ शाह हाइकोर्ट में वकील हैं।
इन्होंने 2015 में मुंबई के गंदे वर्सोवा समुद्र तट की सफाई का बीड़ा उठाया था जो बाद में जन आंदोलन बन गया।

समानता का अधिकार – शून्य भेदभाव दिवस

विश्व भर में 1 मार्च को शून्य भेदभाव दिवस मनाया जाता है। शून्य भेदभाव दिवस सभी प्रकार के भेदभावों से उपर उठकर सभी लोगों को सम्मान के साथ जीवन जीने के अधिकार को बतलाती है।

इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र की यूएन एड्स संस्था विश्व के सभी लोगों को आपसी भेदभावों को दूर करके, अपनी कुशलता से एक–दूसरे का सहयोग करने का संदेश देती है। इसका आयोजन समाज में बराबरी लाने, विविधता को अपनाने तथा प्रतिभा एवं कौशल को महत्व देने के लिए किया जाता है। इस दिन का आरंभ दिसंबर 2013 में यूएन एड्स द्वारा ही किया गया था। इसके प्रतीक के रूप में तितली को चुना गया है।
भारतीय संविधान में सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के मौलिक अधिकार दिए गए हैं।

संविधान के अनुछेद 15(1) के अनुसार राज्य किसी भी नागरिक के साथ जाति, धर्म, लिंग, जन्म स्थान और वंश के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकता।
अनुच्छेद 15(2) कहता है कि–किसी को भी जाति, धर्म, लिंग या वंश के आधार पर दुकानों, होटलों, सार्वजानिक स्थानों, सड़कों, कुओं और तालाबों, में जाने से नहीं रोका जा सकता।
अनुच्छेद 15(3) में महिलाओं और बच्चों को ध्यान में रखा गया है। यह नियम कहता है कि अगर महिलाओं और बच्चों के लिए खास कानुन बनाए जा रहे हैं, जैसे महिला आरक्षण या बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा। तो ऐसा करने से रोका नहीं जा सकता।

इन अधिकारों का उद्देश्य है कि हर नागरिक सम्मान के साथ अपना जीवन जी सके और किसी के साथ किसी आधार पर भेदभाव न हो।